ST. LAWRENCE HIGH SCHOOL
A JESUIT CHRISTIAN MINORITY INSTITUTION

CLASS: 12

पाठ्य सामग्री

SUBJECT :Hindi DATE: 16. 05 .2020

पाठ नाम - कबीर के पद

आलोचनात्मक व्याख्या–

(1) माया महा ठगिनी हम जानि |

तिरगुन फांसी लिए कर डोले, बोले मधुरी बानी |

केसव के कंवला होइ बैठी सिव के भवन भवानी|

पंडा के मूरत होइ बैठी तीरथहू में पानी|

जोगी केजोगिन होइ बैठी राजा के घर रानी |

काहू के हीरा होइ बैठी , काहू के कौड़ी कानी |

भक्ता के भक्तिन होइ बैठी,तुरका के तुरकानी

कह कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी ||

संदर्भ-प्रस्तुत पद कबीर के पद नामक पाठ से अवतरित है | इसके कवि कबीर दास है |

प्रसंग- प्रस्तुत पद में कबीर ने माया के संबंध में चर्चा की है |

व्याख्या- कवि अनुसार माया अत्यंत मोहिनी है और इसी कारणवह सभी की ठगलेती है |
वह अपने साथ तीनों गुणों को साथ लिए चलती है और अपनी मधुर वाणी से सबकोमोहलेती है | यह माया भगवान विष्णु के यहाँ लक्ष्मी रूप में और शिव के यहाँ माँ पार्वती रूप में

विराजमान है | यह ठगिनी माया पंडे के यहाँ प्रतिमा रूप में और तीर्थस्थान में जल रूप में विराजित है | अर्थात पंडा जो महत्व मूर्ति को और तीर्थ यात्री जल को देता है, वह सब व्यर्थ है | उसका कोई उपयोग नहीं है | क्यूंकि यह सब माया का ही ठगिनी रूप है| यह माया योगी के घर में योगिन के रूप में और राजा के घर में रानीके रूप में रहती है| इसी प्रकार धनी और गरीब भी माया के प्रभाव से वंचित नहीं है | यह माया भक्त के घर में भक्तिन के रूप में और ब्राह्मण के घर में ब्राह्मणी रूप में विराजित है | साथ ही यह मुल्ला के घर मेंभी विराजित है | कबीर के अनुसार माया कर विभिन रूपों एवं प्रभावों का वर्णन करना सामर्थ्य के बाहर है | कबीरदास के अनुसार जो प्रभु का सच्चा सेवक है सच्चा भक्त है, माया उसका कुछ नहींकर पाती है | वह उसकी दास बनकर रहती है | अर्थात जो ईश्वर का सच्चा भक्त है ,वह माया के वश में नहीं रहता,बल्कि माया उसके वश में रहती है | इसकी भाषा सधुक्कड़ी है |

(2) झूठे तन को क्या गरबावे | मरे तो पल भरि रहन न पावे |

खीर खांड घृत पिंड सवारा | प्रान गए ले बाहरि जारा |

जिहिं सिरि रचि-रचि बांधत पागा | सो सिरु चंचु सवारहि कागा |

हाड़ जरे जैसे लकड़ी झूरी | केस जरे जैसे त्रिन के कूरी |

कहे कबीर नर अजहूँ न जागे | जम का डन्ड मुड़ महि लागे |

संदर्भ-प्रस्तुत पद कबीर के पद नामक पाठ से अवतरित है | इसके कवि कबीर दास है |

प्रसंग- इस पद में कबीर जी ने जीवन की क्षणभंगुरता का चित्रण किया है |

व्याख्या- कवि अनुसार जिस मानव तन का महत्व मृत्यु के बाद कुछ नहीं रहता भला उसको इतना सवारने से क्या लाभ मिलेगा | खीर, मिष्ठान, घृत आदि से जिस शरीर का पोषण किया , उसी शरीर को मरने के बाद अपने परिजन ही घर से बाहर के जाकर जला देते है | जिस सिर पर पगड़ी बंधी रहती है , उसी सिर को मरने के बाद कौवे नोच- नोच कर खाते है | इस मानव शरीर की हड्डियाँ सूखी लकड़ी की तरह और काले केश सूखी घास की तरह जलकर ख़ाक हो जाता है | कबीर के अनुसार मृत्यु हमेशा सर पर मंडराती रहती है फिर भी मानव मोह- के बंधन में ही फंसा रहता है | अर्थात इस नश्वर शरीर का मोह त्याग कर स्वयं को प्रभु भक्ति में लगाना चाहिए | इसकी भाषा सधुक्कड़ी है |

लघु उतरीय प्रश्न:

1) **हेरत-हेरत हे सखी , रहा कबीर हिराइ| (1+1+1=3)**

बूंद समानी समुद्र में,सो कत हेरी जाइ ||

i) यह किस कवि की रचना है ?

ii) बूंद और समुद्र किसके प्रतीक है ?

iii) इसकी भाषा क्या है?

उ.i) यह कबीरदास की रचना है |

ii) बूंद आत्मा का और समुद्र परमात्मा का प्रतीक है|

iii) इसकी भाषा सधुक्कड़ी है|

2. **जलमें कुंभ,कुंभमें जल है, बाहिर भीतर पानी | (1+1+1=3)**

फूटा कुंभ, जल जलहि समाना, यह तत कथो गियानी ||

i) यहाँ कवि का कौनसा भाव प्रकट हुआ है ?

ii) कुंभ किसका प्रतीक है ?

iii) कुंभ के 'भीतर का जल" ,बाहर का जल किसका प्रतीक है ?

उ. i) यहाँ कवि ने जीवन और जगत को मिथ्या बताया है |

ii) कुंभ माया क प्रतीक है |

iii) कुंभ के भीतर का जल जीव का और बाहर का जल ईश्वर का प्रतीक है|

3. **माया महा ठगिनी हम जानि |**

तिरगुन फांसी लिए कर डोले, बोले मधुरी बानी | (1+2=3)

i) इन पंक्तियों केकवि कौन है ?

ii) कवि ने माया को ठगिनी क्यों कहा है ?

उ. i) इन पंक्तियों के कवि कबीरदास है |

ii) जिस प्रकार ठग लोगों को धोखा देकर उन्हें लुट लेता है उसी प्रकार माया भी लोगों को अपने मोह के बंधन में फँसा कर उनका विनाश कर देती है | इसलिए कवि ने माया को ठगिनी कहा है |

4. **कह कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी ||** **(1+2=3)**

i) प्रस्तुत पंक्ति किस पाठ से लिया गया है ?

ii) कवि किसकी कहानी को अकथ कहते है और क्यों ?

उ. i) प्रस्तुत पंक्ति कबीर के पद नामक पाठ से लिया गया है |

ii) कवि माया की कहानी को अकथ कहते है ,क्यूंकि माया के बंधन से मुक्ति पाना जीव के लिए संभव नहीं है | एक सच्चा भक्त ही माया को जीत सकता है |

5. **जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहिं |** **(1+2=3)**

प्रेम गली अति साँकरी , जामे में दो न समाँहि ||

i) यह पंक्ति किसके द्वारा रचित है ?

ii) प्रेमकी गली साँकरी क्यों है ?

उ.i) यह पंक्ति कबीर द्वारा रचित है |

ii) कवि अनुसार प्रभु की भक्ति का मार्ग सरल एवं सीधा है| यह भक्ति अहंकारी के लिए संभव नहीं है | अहंकार और भक्ति एक साथ एकही मार्ग पर साथ-साथ नहीं चल सकते है | दोनों में सेकिसी एक का चुनाव करना ही पड़ेगा | इसलिए कवि प्रेम की गली को सांकरी कहते है |

6. **<u>निंदक नियरे राखिए , आँगन कुटी छवाय |</u>** **<u>(2+1=3)</u>**

i) **<u>आँगन कुटी छवाय का क्या अर्थ है ?</u>**

ii) निंदक का क्या अर्थ है ?

उ. इस कथन का अर्थ यह है कि निंदक के लिए स्वयं के घर में आश्रय निश्चित कर देना चाहिए जिससे वह हर पल हमारे निकट ही रहे |

ii) निंदक का अर्थ है ,निंदा करने वाला |

<u>शब्दार्थ:</u>

तन- शरीर

पागा- पगड़ी

जम- यमराज

त्रिन- घास

माया- मोह

पंडा- मंदिर का पुजारी

अकथ- जो कहा न जा सके

ठगिनी- धोखा देने वाली

केशव- विष्णु

कमला-लक्ष्मी

हेरत- खोजना

हेराइ- स्वयं खो गए

बांग दे- पुकारना

मुल्ला- मौलवी

पाथर- पत्थर

अंधला- अँधा

निरंध- मुर्ख

कूप- कुआँ

मैं- अहं

हरि- ईश्वर

निरफल- निष्फल

बांवानी- अमूल्य

NAME- PRITI TIWARI